क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रैस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 9879141480

दैनिक
क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्षः 1 अंकः 256, गुरुवार, 11 अक्टूबर, 2018, पेजः 4, मुल्य 1 रु.
रजीस्ट्रड ऑफिसः- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सार समाचार

बेफिक्र होकर करें रेल यात्रा, अब ट्रेनों में मिलेगा 'व्रत' का खाना, ऐसे करना होगा ऑर्डर

नई दिल्ली। एजेंसी। व्रत में रेलयात्रा करने को लेकर चिंतित लोगों को राहत देने वाली खबर। रेलवे बुधवार से शुरू हुए नवरात्र के दौरान अपनी ई-खानपान सूची के तहत कुछ स्टेशनों पर 'व्रत का खाना' उपलब्ध कराएगा। रेलवे की खान-पान इकाई ने कहा है कि इस त्योहार के दौरान कई लोगों द्वारा पारंपरिक रूप से रखे जाने वाले उपवास को ध्यान में रखकर 10-18 अक्तूबर के दौरान अपनी खान-पान सूची में इसे पेश करने का फैसला किया गया है। उनमें साबूदाना, सेंधा नमक, कुट्टु का आटा और कुछ विशेष सब्जियां जैसे सात्विक आहार शामिल हैं। आईआरसीटीसी ने एक बयान में कहा, 'इस साल आईआरसीटीसी ने साल के इस दौरान ट्रेन यात्रा को आरामदेह बनाने के लिए अपनी ई-खान-पान सूची के तहत व्रत का खाना पेश कर रहा है।' बयान के अनुसार ये विशेष भोजन कुछ चुनिंदा रेस्तराओं के माध्यम से कुछ ही स्टेशनों पर उपलब्ध होंगे। ये स्टेशन नागपुर, अंबाला, जयपुर, इटारसी, झांसी, नासिक, रतलाम, दौंड, मथुरा, निजामुद्दीन और लखनऊ हैं।

संबंध बनाने से किया मना तो महिला ने गर्म चिमटे से जलाया किशोर का प्राइवेट पार्ट

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के बादलपुर थाना क्षेत्र में एक शादीशुदा महिला द्वारा कथित तौर पर एक किशोर के साथ अमानवीय व्यवहार करते हुए उसका प्राइवेट पार्ट जलाने का मामला सामने आया है। पीड़ित किशोर 7वीं कक्षा का छात्र है और महिला बादलपुर थाना क्षेत्र के एक गांव में रहती है। बादलपुर थाने के प्रभारी इंस्पेक्टर विजय कुमार ने बताया कि महिला अपने पड़ोस में रहने वाले 13 वर्षीय नाबालिग छात्र को पांच अक्टूबर को अगवा कर अपने घर के अंदर ले गई और शारीरिक संबंध बनाने के लिए उसे मजबूर करने लगी। महिला काफी देर तक संबध बनाने के लिए जबरन कोशिश करती रही, जब किशोर नहीं माना, पहले तो उस महिला उसकी पिटाई कर दी और फिर चिमटा गर्म कर उसके प्राइवेट पार्ट को जला दिया। महिला के चंगुल से छूटकर छात्र ने घर जाकर परिजनों को आपबीती सुनाई।

जामिया में विशेषज्ञों की तीन दिवसीय बैठक संपन्न

नई दिल्ली। जामिया मिल्लिया इस्लामिया में महिला वैज्ञानिकों को आगे बढ़ाने की भारत सरकार की साइंस एवं टेक्नोलॉजी विभाग की महिला वैज्ञानिक योजना-ए के विशेषज्ञों की तीन दिवसीय बैठक मंगलवार को संपन्न हुई। बैठक में महिला वैज्ञानिकों को ज्यादा से ज्यादा अवसर उपलब्ध कराने के प्रयास तेज करने को कहा गया। महिला वैज्ञानिक योजना-ए ऐसी महिला वैज्ञानिकों को अपनी अधूरी रिसर्च को फिर से शुरू करने का अवसर प्रदान करती है जो किन्हीं कारणों से अपना अनुसंधान बीच में छोड़ना पड़ा। डीएसटी के साइंटिस्ट-जी डॉ. संजय मिश्र ने इस बैठक को आयोजित करने के लिए जामिया की सराहना करते हुए कहा कि इसने देश भर से आई महिला वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के लिए बेहतरीन व्यवस्था की और सारगर्भित चर्चा एवं विचार विमर्श का मंच उपलब्ध कराया। देश भर से आए विशेषज्ञों की इस बैठक में नए प्रस्तावों और वर्तमान योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

देशभर में नवरात्रि की धूम, मंदिरों में लगा भक्तों का तांता

देवी मंदिरों में पूजा-अर्चना करने के लिए भक्तों की भीड़ लगी रही। पूजा करने के बाद महिलाओं ने भजन-कीर्तन किए। घरों में भी व्रत रखकर विधि-विधान से पूजा अर्चना की गई। नवरात्रों को लेकर नगर में कई दिन से तैयारियां चल रही थीं। देवी मंदिरों की साफ-सफाई के अलावा साज-सज्जा का काम किया जा रहा था।

न्यू फरक्का एक्सप्रेस पटरी से उतरी, 7 की मौत

रेलवे देगी 5-5 लाख का मुआवजा

रायबरेली। रायबरेली के हरचंदपुर स्टेशन के पास न्यू फरक्का एक्सप्रेस की इंजन समेत पांच बोगियां बुधवार तड़के पटरी से उतर गईं. इस हादसे में 7 लोगों की मौत हो गई, जबकि 35 अन्य घायल हैं. स्थानीय लोगों और हरचंदपुर स्टेशन के स्टाफ के साथ एनडीआरएफ की टीम स्क्यू ऑपरेशन में जुटी है. सीएम योगी आदित्यनाथ ने मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख रुपये और गंभीर रूप से घायलों के लिए 50 हजार रुपये के मुआवजे का ऐलान किया है.

वहीं रेल मंत्री पीयूष गोयल ने ऐलान किया है कि इस घटना में मारे गए लोगों के परिजनों को रेलवे की तरफ से 5-5 लाख रुपये का मुआवजदा दिया जाएगा. वहीं गंभीर रूप से घायलों को एक लाख और सामान्य रूप से घायलों को 50 हजार रुपये का मुआवजा दिया जाएगा.

मामले में उत्तर रेलवे के एडीआरएम काजी महाराज अलाम ने बताया कि 14003 न्यू फरक्का एक्सप्रेस बेपटरी हुई है. इसके लिए रेलवे ने हेल्पलाइन नंबर जारी कर दिया है. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन (मुगलसराय) का हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया है. सूचना के मुताबिक, हादसे में दो बच्चे व एक महिला समेत 7 लोगों की मौत हो गई है. रायबरेली ट्रेन हादसे का संज्ञान लेते हुए डीजीपी ओपी सिंह ने एनडीआरएफ की दो टीमों को घटनास्थल के लिए रवाना कर दिया है. लखनऊ और वाराणसी से एनडीआरएफ की टीमें घटनास्थल के लिए रवाना हो चुकी हैं. रायबरेली की एसपी सुजाता सिंह ने बताया कि अभी तक 7 लोगों की मौत हुई है. घायलों को जिले के अलग-अलग अस्पतालों में एडमिट कराया गया है. गंभीर रूप से घायल लोगों को लखनऊ रेफर किया गया है. मौके पर डीएम, एसपी और सीएमओ भी मौजूद हैं. फिलहाल रेलवे की तरफ से कोई भी हेल्पलाइन नंबर जारी नहीं किया गया है. बचाव कार्य जिला प्रशासन की तरफ से ही चलाया जा रहा है. ट्रेन फरक्का से चलकर रायबरेली होते हुए नई दिल्ली जा रही थी. तभी हरचंदपुर आउटर के पास गलत ट्रैक पर जाने की वजह से यह हादसा हो गया. फिलहाल रेलवे के अधिकारी मौके के लिए रवाना हो चुके हैं. मौके पर स्थानीय पुलिस और एम्बुलेंस पहुंच चुकी है.

गाजियाबाद में बनेगा राजनीतिक प्रशिक्षण संस्थान, इन्हें मिलेगा दाखिला

गाजियाबाद, एजेंसी। उत्तर प्रदेश सरकार ने गाजियाबाद में एक राजनीतिक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में बुधवार को हुई मंत्रिमंडल की बैठक में गाजियाबाद में एक राजनीतिक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किए जाने को मंजूरी दे दी। यह देश में ऐसा पहला सरकारी संस्थान होगा जहां विधायक, पार्षद और युवा तथा अन्य जो राजनीति में प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते है इसमें प्रवेश पा सकेंगे।

संस्थान के लिए 50 करोड़ रुपये मंजूर

राज्य सरकार इसके लिए एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया है। इस प्रशिक्षण सस्थान के लिए 198 करोड़ रुपये का खर्च किया जाएगा। इसमें अगले दो वर्षों में प्रशिक्षण शुरू हो जाएगा। सरकार ने पूरक बजट में संस्थान के लिए पहले ही 50 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। इस प्रशिक्षण संस्थान का निर्माण 60 बीघा भूमि पर किया जाएगा।

राज्य सरकार के प्रवक्ता और ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा ने संवाददाताओं से कहा कि सरकार इस संस्थान में चलने वाले पाठ्यक्रमों की मान्यता के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ बातचीत भी कर रही है।

डिग्री-डिप्लोमा भी दिया जाएगा

प्रदेश के शहरी विकास मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने दावा किया कि संस्थान राष्ट्रीय राजधानी के पास स्थापित किया जा रहा है। संस्थान में देश-विदेश के

प्रमुख गणमान्य लोग तथा राजनीतिक दलों के प्रमुख यहां आएंगे। उन्होंने कहा कि छात्रों और अन्य लोगों को यहां से डिग्री-डिप्लोमा देश के प्रमुख विश्वविद्यालय से संबद्ध होने के बाद दिए जाएंगे।

नवरात्र में मीट की बिक्री पर हिंदू संगठनों ने दुकानदारों को धमकाया, विरोध करने पर पीटा

गुरुग्राम। हरियाणा के गुरुग्राम में नवरात्र के दौरान मीट की बिक्री को लेकर दो समुदायों के बीच तकरार बढ़ गई। आरोप है कि नवरात्र के पहले दिन बुधवार को संयुक्त हिन्दू संघर्ष समिति के बैनर तले विभिन्न संगठनों ने शहर में जुलूस निकालकर प्रदर्शन किया और मीट दुकानदारों के साथ मारपीट की। हालांकि, इस दौरान थाना प्रभारी सेक्टर-पांच के नेतृत्व में भारी संख्या में पुलिस बल भी मौजूद रहा, लेकिन पूरे समय तक पुलिस मूकदर्शक बनी रही।

प्रदर्शन समाप्त होने के बाद सेक्टर-14 थाना पुलिस ने संजय ग्राम में एक दुकानदार के साथ मारपीट के आरोप में चार लोगों को गिरफ्तार किया है। उधर, गिरफ्तारी की सूचना मिलते ही हिन्दू संगठन के लोग सेक्टर-14 थाने के बाहर धरने पर बैठ गए हैं।

प्रदर्शन की अगुवाई कर रहे हिन्दू क्रांति दल के सदस्य राजीव मित्तल के

प्रदर्शन समाप्त होने के बाद सेक्टर-14 थाना पुलिस ने संजय ग्राम में एक दुकानदार के साथ मारपीट के आरोप में चार लोगों को गिरफ्तार किया है। उधर, गिरफ्तारी की सूचना मिलते ही हिन्दू संगठन के लोग सेक्टर-14 थाने के बाहर धरने पर बैठ गए हैं।

मुताबिक, वह बीते 15 दिन से लगातार मुस्लिम समाज के लोगों से नवरात्र के दौरान मीट की दुकानें बंद रखने की अपील कर रहे हैं। इस संबंध में उपायुक्त और मुख्यमंत्री तक को ज्ञापन दिया गया है। उन्हें आश्वासन भी मिला था कि त्यौहारों पर मीट की बिक्री नहीं होगी, लेकिन प्रशासन ने इसके लिए जमीन पर कोई पहल नहीं की।

ऐसे में विभिन्न संगठन के लोगों ने नवरात्र के पहले दिन खुद ही मीट की दुकानें बंद कराने के लिए जुलूस निकाला। इस दौरान कई जगहों पर मीट की दुकानें खुली नजर आईं, जिन्हें धमका कर दुकान बंद करा दी गईं।

तीन स्थानों पर हुई मारपीट

हिन्दू संगठनों के प्रदर्शन के दौरान तीन स्थानों पर दुकानदारों के साथ मारपीट किए जाने का भी आरोप है। जुलूस शुरू होते ही शीतला कॉलोनी में मुर्गा काट रहे एक दुकानदार को संगठन के लोगों ने थप्पड़ मार दिया।

सेक्टर-12 मोड़ पर संगठन के लोगों ने एक बिरयानी की दुकान पर तोड़फोड़ की और तंदूर में पानी डाल दिया। इसी प्रकार संजय ग्राम में संगठन के लोगों ने एक दुकानदार की जमकर पिटाई कर दी।

इस पूरे घटनाक्रम के दौरान सेक्टर-पांच थाना प्रभारी सुमित कुमार के नेतृत्व में भारी पुलिस बल मौके पर मौजूद था, लेकिन पुलिस पूरे समय तक तमाशबीन बनी रही। हालांकि, बाद में पुलिस ने चार लोगों को मारपीट की धाराओं के तहत गिरफ्तार कर लिया है।

कीमतें घटाने के लिए सरकार को मजबूत करेंगेः गुप्ता

पेट्रोल-डीजल पर वैट कम करने की मांग को लेकर प्रदर्शन

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री विजय गोयल भी केजरीवाल सरकार के खिलाफ सड़क पर उतरे, उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ साइकिल चलाकर पेट्रोल-डीजल की मौजूदा कीमतों पर विरोध जताया। उन्होंने पहाड़गंज में साइकिल रैली निकाली और दिल्ली सरकार पर बिजली के बिलों में हुई बढ़ोतरी को लेकर भी हमला बोला। गोयल ने कहा कि स्थिति यह है कि अब दिल्ली के लोग एनसीआर के शहरों से पेट्रोल लेने जाते हैं। पहाड़गंज इलाके से साइकिल रैली गुजरती हुई मुंजे चौक पहुंची। वहां उन्होंने लोगों को केजरीवाल सरकार के वैट की जानकारी देते हुए कहा कि उनके अड़ियल रुख के चलते दिल्लीवासी महंगाई की चक्की में पिस रहे हैं। वहीं दूसरी ओर पेट्रोल एवं डीजल पर मूल्यवर्धित कर (वैट) कम करने की मांग को लेकर मंगलवार को भाजपा नेताओं ने केजरीवाल सरकार के विरोध में कई जगह प्रदर्शन किया। पूर्वांचल मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने आप मुख्यालय पर प्रदर्शन कर दिल्ली सरकार से पेट्रोल-डीजल की कीमतें घटाने की मांग की। पूर्वांचल मोर्चा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी ने अपील की कि वह घर-घर जाकर दिल्ली सरकार की खामियों को उजागर करें। पार्टी के महामंत्री रविंद्र गुप्ता ने कहा कि पार्टी केजरीवाल सरकार को पेट्रोल-डीजल पर वैट घटाने के लिए बाध्य करेगी। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि केंद्र के निर्णय के बाद भी दिल्ली सरकार अड़ियल रुख अपना रही है। इससे दिल्लीवासियों को लगातार आर्थिक नुकसान हो रहा है।

सभी विधान सभा क्षेत्रों में संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का संचालन होगा : सिसोदिया

नई दिल्ली। संस्कृत भाषा में दैनिक प्रयोग में आने वाले मंत्रों को प्रयोग जब हम करते हैं तो उसके बारे में आम लोगों को पता होता चाहिए कि जो मंत्र या पूजा हम करते हैं उसका अर्थ क्या है। इसी को लोगों तक पहुंचाने के लिए दिल्ली सरकार संस्कृत अकादमी के माध्यम से संस्कृत के ज्ञान के साथ साथ लोगों को आम प्रयोग में अने वाले मंत्रों के बारे में ज्ञान हो सके । इसके लिये दिल्ली के सभी विधान सभा क्षेत्रों में संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का संचालन किया जाएगा। ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा पूर्वी विनोद नगर में में आयोजित व्यावहारिक संस्कृत अध्ययन केन्द्र का शुभारम्भ करते हुये मुख्य अतिथि के रूप में उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने व्यक्त किए।

स्वाइन फ्लू के प्रकोप से स्वास्थ्य एजेंसियां अलर्ट मोड में

95 लोग पहुंचे अस्पताल केंद्रीय स्वास्थ मंत्रालय की रिपोर्ट में हुआ खुलासा

नई दिल्ली। राजधानी में लोग इन दिनों डेंगू, मलेरिया व मैन टू मैन फैलने वाले संक्रामक रोग एच1एन1 स्वाइन फ्लू से जूझ रहे हैं। इस मौसम में आर्द्रता में तेज गिरावट को विशेषज्ञ इस विषाणु की सक्रियता का मुख्य कारण मानते हैं। इस मौसम में कमजोर इम्यून सिस्टम वाले लोग बीमार हो जाते हैं। स्वास्थ विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक पिछले 15 दिन में 95 लोगों को स्वाइन फ्लू पाजिटिव पाया गया है। यही नहीं, विभिन्न अस्पतालों में स्वाइन के फ्लू लक्षण वाले मरीजों का दबाव बढ़ रहा है। केंद्रीय स्वास्थ मंत्रालय द्वारा जारी रिपोर्ट ने खुलासा किया है। जबकि एक व्यक्ति की इसके कारण मौत भी हो चुकी है। बताया जा रहा है कि दिल्ली में पिछले कुछ सालों की तुलना में अबकी बार स्वाइन फ्लू के वायरस कम प्रभावी नजर आ रहे हैं।

एच1एन1 मिशिगन स्ट्रेन अटैक : आमतौर पर अक्तूबर में स्वाइन फ्लू के ज्यादात्तर मरीज देखने को मिलते हैं, लेकिन इस साल जुलाई से ही दिल्ली में स्वाइन फ्लू का असर दिख रहा है। मैक्स कैथलैब के निदेशक डॉ. विवेका कुमार की मानें तो इस वक्त मिशिगन स्ट्रेन का जोर होने के कारण स्वाइन फ्लू के वायरस का प्रभाव कम है। दरअसल, एच1एन1 वायरस के छह स्ट्रेन होते हैं, जिनमें से एक है मिशिगन स्ट्रेन।

पेट्रोल एवं डीजल पर वैट कम करने की मांग को लेकर मंगलवार को साइकिल चलाकर दिल्ली सरकार के खिलाफ प्रदर्शन में शामिल केंद्रीय मंत्री विजय गोयल।

संपादकीय

सफेद झूठ

गुजरात से भागते उत्तर भारतीयों को देखकर कोई भी अंदाजा लगा सकता है कि वहां क्या हुआ होगा। सामान्य स्थिति में कोई अपनी रोजी-रोटी छोड़कर वापस नहीं आता। गुजरात पुलिस का कहना कि बहुत सारे लोग त्योहार मनाने जा रहे हैं, सफेद झूठ है। इस समय ऐसा कोई त्योहार नहीं जिसके कारण वहां से भरी हुई रेलें उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश की ओर आएं। यह साफ है कि ठाकोर सेना के लोगों ने एक नाबालिग के साथ हुए बलात्कार का बहाना बनाकर धमकी भरा ऐसा वातावरण बनाया कि उत्तर भारतीय जान बचाकर भागने लगे। इस जघन्य अपराध के आरोप में एक बिहारी के पकड़े जाने के बाद ऐसा आक्रोश पैदा किया मानो उत्तर प्रदेश, बिहार या मध्य प्रदेश के सारे लोग अपराधी ही हों। हालांकि गुजरात सरकार ने अब सख्ती बरती है। सारे पुलिस वालों की छुट्टियां रद्द कर उनकी उन जगहों पर तैनाती की गई है, जहां कारखानों या बाजारों में उत्तर भारतीय कार्यरत हैं या उनका खुद का व्यापार है या फिर उनका निवास है। किंतु स्थिति अभी तक बहुत बदली नहीं है। गुजरात सदियों से प्रवासियों का स्वागत करने वाला प्रदेश रहा है। गुजराती समुदाय खुद प्रवासी बनकर जहां भी गए वहां दूसरी संस्कृतियों के साथ घुल-मिलकर रहते हैं। इसलिए गुजरात में ऐसी संकीर्ण और घातक क्षेत्रीयता को उभारा जा सकता है, इसकी कल्पना नहीं थी। कांग्रेस के विधायक एवं ठाकोर सेना के संयोजक अल्पेश ठाकोर प्रवासियों के खिलाफ लोगों को भड़का रहे हैं। घृणा पैदा कर आग लगाने में उनकी तथा उनके संगठन की भूमिका प्रमुख रही है। कहा जा रहा है कि ज्यादातर उत्तर भारतीय एक पार्टी को वोट देते हैं, इसलिए ऐसी साजिश रची गई। यह अत्यंत शर्मनाक है। ये लोग भूल रहे हैं कि गुजरात की अर्थव्यवस्था में गैर गुजरातियों का बहुत बड़ा योगदान है। वहां करीब एक तिहाई से ज्यादा कामगार गैर गुजराती ही हैं। उच्च पदों से मजदूर तक ये भरे-पड़े हैं। इनने वहां स्वयं का कारोबार भी खड़ा किया है। अगर ये बाहर हो गए तो गुजरात की अर्थव्यवस्था की चूल हिल जाएगी। तभी तो उद्योग एवं व्यापार संगठनों ने मुख्यमंत्री विजय रुपाणी से मिलकर इसे रोकने तथा गैर गुजरातियों की सुरक्षा की मांग की है। यह भयावह स्थिति जितनी जल्दी रु के उतना ही अच्छा। देश सबका है।

''सबरीमाला बचाओ यात्रा'

बरीमाला मंदिर में सभी उम्र की महिलाओं को प्रवेश देने वाले सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के प्रति जिस तरह की जन प्रतिक्रियाएं अपेक्षित थीं, बिल्कुल वैसी ही हुई हैं। सर्वोच्च अदालत की पीठ ने मंदिर में प्रवेश पर लगे पुराने प्रतिबंध को लैंगिक भेदभाव और हिन्दू महिलाओं के धार्मिक अधिकारों का उल्लंघन बताया था। समाज के प्रगतिशील तबके ने प्रतिबंध को अनुचित ठहराते हुए सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का समर्थन किया, लेकिन मंदिरवादी और रूढ़िवादी वर्ग अपने किसी भी धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं में बाह्य हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करता है। इस वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले राष्ट्रीय अय्यपा श्रद्धालु एसोसिएशन की अध्यक्ष शैलजा विजयन ने सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर करके अनुरोध किया है कि वह अपने फैसले की समीक्षा करे। वास्तव में कोई भी ऐसी प्रवृत्ति या परम्परा जिसमें महिलाओं का बहिष्कार शामिल हो, उसका समर्थन संविधान नहीं करता है। सर्वोच्च अदालत ने संविधान में प्रदत्त स्वतंत्रता और समानता के बृहत्तर मूल्य के अनुरूप ही फैसला दिया है। जहां कहीं भी संवैधानिक व्यवस्थाओं का हनन होता है, शीर्ष अदालत को हस्तक्षेप करना पड़ता है। संविधान ने अदालत को यह अधिकार दिया है। सर्वोच्च अदालत के ही हस्तक्षेप के कारण समाज में सदियों से प्रचलित बहुत-सी धार्मिक-सामाजिक जड़ताएं समाप्त हो सकीं हैं। सर्वोच्च अदालत के फैसले से देशका आम आदमी प्रसन्न है।

विरोध करने वाले मुट्ठी भर लोग हैं, जिन्हें समझने की जरूरत है। केरल की माकपा नीत एलडीएफ सरकार ने न्यायालय के फैसले को लागू करने की अपनी वचनबद्धता दोहराकर प्रशंसनीय काम किया है। लेकिन राजनीतिक दल वोट बैंक के चलते जनभावनाओं में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। राजनीतिक दलों की भूमिका यह होनी चाहिए कि वे रूढ़िवादी मानसिकता के विरुद्ध साहस दिखाएं। लेकिन भाजपा की प्रदेशइकाई आस्था और धार्मिक विास के नाम पर सबरीमाला के मसले का राजनीतिककरण कर रही है। उसने पंडलम से तिरुवनंतपुर के बीच पांच दिवसीय ''सबरीमाला बचाओ यात्रा' आयोजित करने की घोषणा करके अनावश्यक ही इस मामले को तूल दे दिया है। भाजपा को रूढ़िवादियों-मंदिरवादियों का समर्थन करने के बजाय देश के कानून और संविधान के प्रति अपनी आस्था प्रकट करनी चाहिए।

समाज पर धार्मिक संस्थाओ

धर्म का इस्तेमाल करने वाली राजनितिक शक्तियों ने इस परिस्थिति का लाभ उठाया और उसे हवा दी। स्थिति यह उत्पन्न हो गयी कि चुनाव के लिए भी मंदिर-मस्जिद का मुद्दा खुलेआम इस्तेमाल किया जाने लगा। इससे न केवल धर्मसुधार की परंपरा का लोप हुआ और धार्मिक कट्टरता को बल मिला, बल्कि संविधान की मूल प्रतिज्ञा-धर्मनिरपेक्षता-की भी क्षति हुई। जिन राजनीतिक शक्तियों को इससे लाभ हुआ, वे धर्म की भावना का इस्तेमाल करने और उसे भड़काने में विशेष सक्रिय हुए। पिछले दिनों केरल के सबरीमाला मंदिर में रजस्वला महिलाओं के प्रवेश की अनुमति देकर सर्वोच्च न्यायालय ने सुधार की भावना को प्रतिबिंबित किया।

सतीश पेडणोकर

एक पहचान यह है कि समाज पर धार्मिक संस्थाओं की जगह राजनीति के नियम चलते हैं। धर्म का प्रभुत्व मध्यकालीनता की पहचान है। कबीर-जायसी-तुलसी के समय से राममोहन राय-विवेकानंद-गांधी और स्वाधीनता आंदोलन तक हमारे समाज ने आधुनिकता की जो यात्रा की थी, वह पिछले दो दशकों में वापस मध्ययुगीनता की ओर लौट पड़ी है। इसका परिणाम यह है कि भक्ति आन्दोलन से स्वाधीनता आंदोलन तक समाज सुधार और धर्म सुधार की जो लहर चली, वह एकाएक ठप हो गयी, गुफाओं-कंदराओं से निकलकर साधु-संन्यासी संसद और विधानसभाओं की ओर दौड़ लगाने लगे। वे केवल के धर्म के नहीं, समाज के मामलों में भी निर्णय और आदेश देने लगे। धर्म का इस्तेमाल करने वाली राजनितिक शक्तियों ने इस परिस्थिति का लाभ उठाया और उसे हवा दी। स्थिति यह उत्पन्न हो गयी कि चुनाव के लिए भी मंदिर-मस्जिद का मुद्दा खुलेआम इस्तेमाल किया जाने लगा। इससे न केवल धर्मसुधार की परंपरा का लोप हुआ और धार्मिक कट्टरता को बल मिला, बल्कि संविधान की मूल प्रतिज्ञा-धर्मनिरपेक्षता-की भी क्षति हुई। जिन राजनीतिक शक्तियों को इससे लाभ हुआ, वे धर्म की भावना का इस्तेमाल करने और उसे भड़काने में विशेष सक्रिय हुए। पिछले दिनों केरल के सबरीमाला मंदिर में रजस्वला महिलाओं के प्रवेश की अनुमति देकर सर्वोच्च न्यायालय ने सुधार की भावना को प्रतिबिंबित किया, लेकिन धर्म की राजनीति करने वालों ने इसमें अपने लिए ध्रुवीकरण का सामान प्राप्त कर लिया। मामला यह है कि इंडियन यंग लायर्स एसोसिएशन ने सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर करके सबरीमाला मंदिर की सदियों से चली आ रही एक प्रथा को चुनौती दी। इस प्रथा के अनुसार दस वर्ष से पचास वर्ष तक की महिलाओं को मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं है। सभी पक्षों की सुनवाई के बाद न्यायालय ने यह प्रतिबंध हटा दिया। उसने संविधान की भावना के अनुरूप निर्णय किया। किसी भी व्यक्ति को पूजा के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता; कानून की नजर में ही नहीं, भगवान की नजर में भी कोई श्रेष्ठ और कोई हीन नहीं है; किसी भी आधार पर नागरिकों में भेदभाव करना सभ्य तरीका नहीं है। न्यायालय का दृष्टिकोण समाज सुधार की महान परंपरा के अनुकूल है। लेकिन यह धर्म की कट्टरता का दौर है। तुष्टिकरण और ध्रुवीकरण की राजनीति के कारण सभी धर्मो के कट्टरपंथी किसी कानून, किसी सामाजिक सद्भाव को मानने के लिए तैयार नहीं है। अब समाज की करवट से धर्म में बदलाव नहीं होता, धर्म की जड़ता से समाज का कायाकल्प होता है। देखने की बात है कि सुधार की भावना को सर्वोच्च न्यायालय का आदेश प्रतिबिंबित करता है, भेदभावमूलक नियमों को बनाए रखने में पण्डे-पुजारी और सामंती तत्वों के साथ ही धर्म को राजनीति में घोलने वाली शक्तियां काफी आक्रामक रूप में सक्रिय हैं। यह संयोग की बात नहीं है कि सर्वोच्च न्यायालय में संशोधन याचिका दायर करने का काम पुजारियों और राजपरिवार के सदस्यों ने किया है, इससे धर्म और सामंतवाद का गठबंधन स्पष्ट होता है; और न्यायालय के आदेश के विरुद्ध पांच दिनों की यात्रा भाजपा ने आयोजित की है, जो चुनाव के पहले राममंदिर के मुद्दे को बड़े पैमाने पर हवा दे रही है। अफसोस यह है कि गांधी और नेहरू की कांग्रेस भी अब सुधार की चेतना बहुर दूर जा चुकी है जो जनता के विास का उपयोग करते हुए समाज सुधार के रस्ते पर चलती थी और रूढ़िवाद का खंडन करती थी। अब वह राजनीतिक लाभ के लिए ''नरम हिंदुत्व' का इस्तेमाल कर रही है। इसलिए केरल में हिन्दू भावनाओं को उकसाने में वह भी सक्रिय सहयोग कर रही है। वहां की वामपंथी सरकार ने पुनर्विचार याचिका न दायर करने निर्णय लिया है। केरल के मुख्यमंत्री ने न्यायालय का निर्णय लागू करने के प्रति वचनबद्धता प्रकट की है। इस बात के लिए पण्डे-पुजारी और राजपरिवार के लोग ही नहीं, भाजपा और कांग्रेस भी उसकी आलोचना कर रहे हैं। इन सभी को वामपंथी सरकार के विरु द्ध धर्म का हथियार मिल जाने का संतोष मालूम होता है। इसमें संदेह नहीं कि वामपंथी सरकार के लिए धर्म का यह प्रसंग एक गंभीर चुनौती बनकर उभरा है। परीक्षा की इन घड़ियों में राजनीतिक दलों की भी परख होती है। वे केरल के महान सुधार आंदोलनों की परंपरा को आगे ले चलेंगे या उन सुधारों को धूल में मिला देंगे, यह सबसे बड़ा प्रश्न है। अपने रूढ़िवादी दायरे में सिमटकर धर्म किस पतन की दशा में पहुंचते हैं, यह आज सभी धर्मो में देखा जा सकता है। क्या हिन्दुओं के धर्मगुरु और मठाधीश और क्या मुसलमानों या ईसाइयों के पुजारी, सभी संपत्ति के अपहरण और महिलाओं के शोषण के मामलों में पर्याप्त यशस्वी हो रहे हैं। सभी जगह एक दबी-सी आवाज सुधारकों की भी मुखरित हो रही है, जिसे सामंतों-पुजारियों और राजनीतिज्ञों के

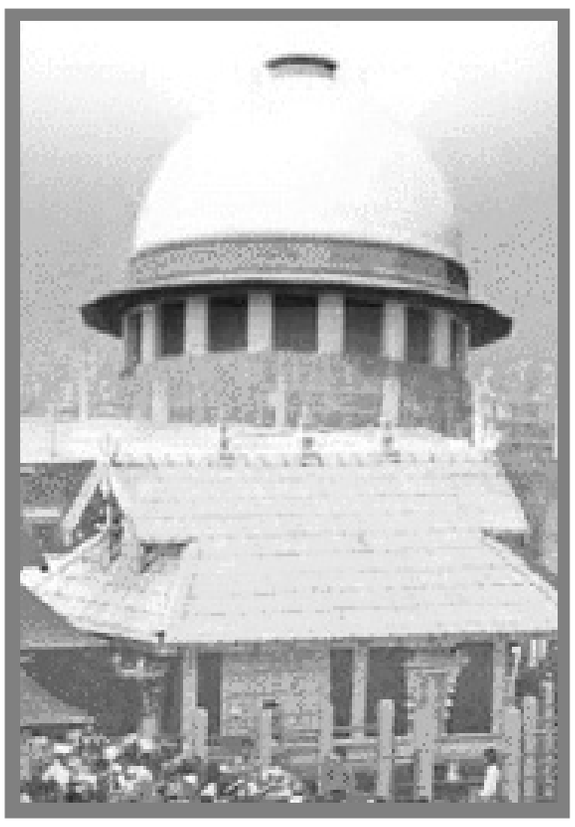

गठजोड़ के नीचे दबाने का भरसक प्रयत्न हो रहा है। सर्वोच्च न्यायालय ने इस सुधार की वाणी को बल प्रदान किया है। सबरीमाला में प्रवेश के खिलाफ बहुत-सी महिलाएं सड़कों पर उतरी हैं। कुछ दिन पहले महाराष्ट्र के शनि शिगनापुर के गर्भगृह में महिलाओं के प्रवेश की अनुमति देकर सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसे ही विवाद को जन्म दिया था। तब भी कुछ महिलाएं विरोध में उतरी थीं। संसद द्वारा तीन तलाक के कानून के विरु द्ध भी बहुत-सी महिलाएं प्रदर्शन में शामिल थीं। एक तो पितृसत्ता का वर्चस्व और दूसरे राजनीतिक पक्षधरता का असर, इन कारणों से कुछ महिलाओं को सड़क उतरना कठिन नहीं है। लेकिन मनुष्य के रूप में समानता की आकांक्षा महिलाओं में न होगी, यह सोचना एक असभ्य विचार है। खुद सर्वोच्च न्यायालय में दो विचारों का आना यह बताता है कि आज के हालत में कोई निर्णय आसान नहीं है। न्यायमूर्ति इंदु मल्होत्रा का विचार था कि धार्मिक स्वतंत्रता के मामलों में दखल न देना चाहिए, न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ का कहना था कि महिलाएं भगवन की नजर में कमतर नहीं हैं। इस तरह, धार्मिक स्वतंत्रता बनाम पूजा का समान अधिकार-यह समस्या अदालत के सामने भी थी। लेकिन अदालत ने संविधान की भावना, आधुनिक जीवन मूल्य और सुधार आंदोलनों की परंपरा के अनुकूल रुख अपनाया। यह अब व्यापक समाज को तय करना है कि देश किस तरफ जाएगा-भेदभावपूर्ण नियमों से परिचालित मध्ययुगीन अंधकार की तरफया सभ्यता से अर्जित मानवीय समानता की तरफ समाज का नियंतण्र पण्डे-पुरोहित करेंगे या कानून; जाति-धर्म-लिंग के आधार पर दमन की परिपाटी चलेगी या स्वेच्छा पर आधारित स्वस्थ भविष्य निर्मित होगा! सबरीमाला के विवाद ने हमारे समाज और राजनीति के सामने यह प्रश्न बड़े उत्कट रूप में फिर उपस्थित कर दिया है।

चलते चलते

सफाई अभियान

सफाई अभियान में नायं गयौ का!-गया था! नगरपति को आना था, इसलिए सड़क पहले से ही साफ करा दी गई थी! नगरपति के साथ उनकी पत्नी, दो विधायक और बीस-पच्चीस स्थानीय नेता आए। फोटोग्राफर दूर खड़े थे, पास आ गए, क्योंकि सड़क पर कूड़ा तो था नहीं। उनके कैमरों के लैसों को भी कोई खतरा नहीं था। मखमल में लपेट कर चार वीआईपी झाड़ुएं लाई गई। -बीआईपी झाड़ू?-हां चचा! हर झाड़ू की एक-एक सींक पर रेगमाल फेरा गया था और डंडों को झंडू का तेल पिलाया गया था, ताकि नेताओं के करकमलों में कोई फांस न चुभ जाए। नगरपति की पत्नी केवल घर की झाड़ू को ही हाथ लगाती थीं, सड़क-झाड़ू उन्होंने छुई नहीं। इस प्रकार एक झाड़ू काम में न आ सकी। किसी स्थानीय नेता को

डंडों को झंडू का तेल पिलाया गया था, ताकि नेताओं के करकमलों में कोई फांस न चुभ जाए। नगरपति की पत्नी केवल घर की झाड़ू को ही हाथ लगाती थीं, सड़क-झाड़ू उन्होंने छुई नहीं। इस प्रकार एक झाड़ू काम में न आ सकी। किसी स्थानीय नेता को वीआईपी झाड़ू छूने का साहस न हुआ। नगरपति और विधायकों ने एक-एक झाड़ू अपने-अपने हाथ में ले ली।

वीआईपी झाड़ू छूने का साहस न हुआ। नगरपति और विधायकों ने एक-एक झाड़ू अपने-अपने हाथ में ले ली। फोटोग्राफर एक्शन में आ रहे थे, तभी नगरपति ने मोटे ईवेंट-बंदे के कान में कहा, ''कूड़ा तो मंगवाओ'। मोटे को चिंता थी कि कहीं ये नेता झाड़ू को सड़क पर न रख दें, सड़क कितनी भी साफ हो, झाड़ू गंदी हो सकती थी। उसे अगला ईवेंट भी कराना था। तीनों ने अपनी झाड़ुओं को सड़क से ऊपर उठाकर इस तरह पकड़ा हुआ था कि समान हस्तमुद्रा के साथ तीनों झाड़ुएं एक दूसरे के समानांतर थीं। बड़ी देर तक कूड़ा नहीं आया, तो नेताओं को पसीना आया। थकहार कर उन्होंने अपनी-अपनी झाड़ू सड़क पर टिका दीं। ईवेंट-बंदे के तो प्राण ही निकलने को थे। फोटोग्राफरों को हिदायत थी कि जब तक गंधहीन, सिंथैटिक, ऑर्गेनिक कूड़ा न आ जाए, तब-तक फोटो न खींचे जाएं। पर एक ने खींच ही लिया। सफाई कर्मचारियों का संदेश आया, हम हड़ताल पर हैं।

पहले हम हड़ताल के दौरान अपने हित में कूड़ा नहीं उठाते थे, अब देश के हित में कूड़ा डालेंगे भी नहीं। दूसरी तरफ गंदानाला बस्ती थी, वहां बेशुमार कमेरी झाड़ुएं धूप में लेटी हुई थीं। मखमली झाड़ुओं के दिन नहीं फिरे, क्योंकि सड़क पर कभी फिरी ही नहीं।-का पतौ कौन सी झाड़ून के दिन फिरिंगे!

फोटोग्राफी...

कंबोडिया के कंदल प्रांत में मंगलवार को पारंपरिक भैंसा दौड़ में भाग लेते लोग।

सत्संग

"हे ईर मुझे यह दो,

सान कभी भी भगवान के बारे में सोचकर आध्यात्मिक नहीं बनता। अगर आप भगवान के बारे में सोचते तो आम तौर पर आप सिर्फ अपने को बचाने के बारे में ही सोचते हैं। दुनिया की अठानवे प्रतिशत प्रार्थनाओं में लोग यही मांगते हैं, ''हे ईर मुझे यह दो, वह दो, मेरी रक्षा करो आदि।' यह कोई आध्यात्मिकता नहीं है, यह तो बस अपने जीवन को सुरक्षित रखना है। आप आध्यात्मिकता के बारे में तभी सोचते हैं, जब मौत से आपका सामना होता है। जब आपको इस बात का पता चलता है और अहसास होता है कि आप नश्वर हैं, आप मर सकते हैं, कल सुबह भी आप मर सकते हैं तब आप जानना चाहते हैं कि आखिर ये सब क्या चीज है? तब आप जानना चाहते हैं कि ''मैं जो हूं' उसकी असली प्रकृति क्या है? आप जानना चाहते हैं कि आप कहां से आए हैं और आप कहां जाएंगे? बीसवीं सदी में एक असाधारण इंसान और मस्तमौला आध्यात्मिक गुरु हुए-गुरजिएफ। वह कहते थे, ''अगर आप मानव शरीर में एक नया अंग लगा दें, जिसका असली काम लगातार आपको याद दिलाना हो कि आप भी एक दिन मर जाएंगे, तब पूरी दुनिया को आत्मज्ञान हो जाएगा।' अगर हर इंसान खुद को रोजाना याद दिलाता रहे कि उसे मरना है तो इससे उसका काफी भला हो सकता है। खुद को बस रोजाना यह याद दिलाने से कि आप नश्वर हैं, आप खुद को आध्यात्मिक होने से नहीं रोक सकते। ज्यादातर योगी अपने जीवन के शुरु आती दिन श्मशान में बिताते हैं। मृत्यु अपने आप में संपूर्ण होती है, यह जब भी होती है तो आपको इसके बारे में सोचना नहीं पड़ता, आपको इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देनी होती, जबकि नश्वरता, जो जीवन की प्रकृति है, उसके बारे में आपको सोचना होता है। इसीलिए श्मशान को बेहद पवित्र जगह के तौर पर देखा जाता था। जब कोई भी मरता है तो आपकी नश्वर प्रकृति आपके शरीर को कहीं न कहीं छूती है, यह भावनात्मक प्रतिक्रिया से कहीं ज्यादा होती है। भले ही आप मरने वाले व्यक्ति को नहीं जानते हों, लेकिन जब आप किसी को मरा हुआ देखते हैं तो यह चीज आपको कहीं न कहीं आघात पहुंचाती है। किसी मरे हुए इंसान को देखकर मानसिक व भावनात्मक प्रतिक्रिया तो होती है, लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण चीज है कि शरीर अपने तरीके से जीवन को आत्मसात करता है।

स्त्री शक्ति

भारत के सांस्कृतिक पवरे में सबसे ज्यादा लोकप्रिय है नवरात्र। नवरात्र काल में हमारा उत्सवप्रिय राष्ट्र आस्था के अनूठे रंग में डूबा नजर आता है। जगतजननी मां दुर्गा की आराधना का यह उत्सव तमाम क्षेत्रीय विशिष्टताओं के साथ समूचे देश में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। इस अवधि में जहां एक ओर उत्तर भारत व उत्तराखंड में रामलीलाओं की धूम दिखती है, वहीं दूसरी ओर पश्चिमी बंगाल में महिषासुरमर्दिनी के पूजन की। गुजरात में गरबा उत्सव और मैसूर व कुल्लू में दशहरा उत्सव के अनोखे रंग भी देखने वाले होते हैं। कहीं भव्य पूजा पंडालों की रौनक, कहीं सप्तशती पाठ के आयोजन, कहीं मानस के पारायण पाठ तो कहीं भागवत सप्ताह। देवी मां के मंदिरों में लगने वाले जयकारे भी एक दिव्य माहौल का सृजन करते दिखते हैं। हिन्दू दर्शन में नवरात्र काल को शक्ति संचय की दृष्टि से अति विशिष्ट माना जाता है। इन नौ दिनों में भगवती दुर्गा के विविध रूपों की आराधना पुरु षार्थ साधिका देवी के रूप में की जाती है। सर्वप्रथम श्रीराम ने रावण से युद्ध के पूर्व नवरात्र काल में मां शक्ति की आराधना की थी और देवी ने उन्हें ''विजयश्री' का वरदान दिया था। कहते हैं देवी की आराधना रावण ने भी की थी पर देवी से उसको ''कल्याणमस्तु' की आशीष मिली। यह प्रसंग हिन्दू दर्शन के उस उत्कृष्ट चिंतन का परिचायक है जो बताती है कि शक्ति उसी को फलित होती है, जो सत्य, न्याय व मर्यादा का पक्षधर होता है। देवी मां ने रावण को ''कल्याणमस्तु' का आशीर्वाद इसलिए दिया क्योंकि उसके विनाश में ही धरती का कल्याण निहित था। सनद रहे कि मातृ सत्तात्मक समाज हमारी आर्य संस्कृति की अनूठी विशिष्टता है। भारत की यशस्वी संस्कृति स्त्री को विभिन्न रूपों में मान देती है। वह जन्मदात्री मां के रूप में पोषक है, पत्नी के रूप में गृहलक्ष्मी तथा बहन व बेटी के रूप में घर की रौनक। प्रत्येक स्वरूप रूप में उसका अपना ही महत्त्व है। हमारे यहां ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' कह कर नारी को देवी का मान दिया गया है। देवी दुर्गा वस्तुत: स्त्री शक्ति की अपरिमितता की द्योतक हैं। हमारे ऋषियों ने आदिशक्ति की इसी गौरव गरिमा को समाज में प्रतिष्ठित करने के लिए ऋतु परिवर्तन की बेला में नवरात्र साधना का विधान बनाया था।

वैदिक चिंतन कहता है कि मां आदिशक्ति ही विविध अंश रूपों में सभी देवशक्तियों में विराजमान हैं। उनके बिना समस्त देवशक्तियां अपूर्ण हैं। शक्ति यानी भयमुक्ति। शक्ति उपासना के इस विशिष्ट साधनाकाल में साधक आदि शक्ति की उपासना के साथ विभिन्न रूपों नारी शक्ति की गरिमा को साकार रूप देते हैं। श्रीमद्देवी भागवत के ''दुर्गा सप्तशती' अंश में भगवती दुर्गा की अभ्यर्थना पुरुषार्थ साधिका देवी के रूप में की गयी है। सप्तशती के 13 अध्यायों में इन्हीं महाशक्ति के द्वारा आसुरी शक्तियों के विनाश की कथा विस्तार वर्णित है, जिसके पीछे शक्ति की महत्ता का दिव्य तत्व दर्शन निहित है।

अध्यात्मवेत्ताओं का मानना है कि इन कुत्सित अपराधों का मूल कारण है, हमारा हमारी जड़ों से कटते जाना, अपने सांस्कृतिक जीवनमूल्यों को दरकिनार कर पश्चिम की नितांत भोगवादी संस्कृति व बाजार के मायाजाल में फंसना। और व्यक्ति अपने कर्तव्य से च्युत होकर भोग विलास, स्वार्थ एवं अधिकार मद के कारण विवेक शून्य हो जाता है। यही वजह है कि मात्र कड़े कानून बना देने से ही इस प्रकार की घटनाओं पर रोक लग पाना सम्भव नहीं है। इसके लिये समाज को भी नैतिक रूप से सजग होना पड़ेगा।

आज का इतिहास

- 1265: एवेशम की लड़ाई में ब्रिटेन के प्रिंस एडवर्ड ने साइमन डी मोंटफोर्ट को हराया।
- 1636: जोहान मॉरिशस डच ब्राजील के गवर्नर बनाये गये।
- 1664: संगीतज्ञ लुईस लुली का पेरिस में जन्म हुआ।
- 1666: नीदरलैंड और इंग्लैंड के बीच समुद्री लड़ाई हुई।
- 1805: आयरलैंड के गणितज्ञ विलियम रोवन हैमिल्टन का जन्म हुआ।
- 1875: बच्चों के लिए खूबसूरत कहानियां लिखने वाले हैन्स क्रिश्चियन एंडरसन का जन्म हुआ।
- 1870: ब्रिटिश रेडक्रॉस सोसायटी की स्थापना।
- 1886: कोलंबिया ने संविधान अंगीकार किया।
- 1929: अभिनेता, गायक, निर्देशक किशोर कुमार का जन्म।
- 1935: भारत शासन अधिनियम 1935 को महारानी की स्वीकृति मिली।
- 1947: जापान में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना।
- 1956: भारत के पहले परमाणु अनुसंधान केंद्र अप्सरा ने काम करना शुरू किया।
- 1961: अमेरिका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बराक ओबामा का जन्म हुआ।
- 1964: अमेरिका ने उत्तरी वियतनाम के साथ युद्ध आरंभ किया।
- 1967: विश्व के सबसे लंबे चिनाई बांध नागार्जुनसागर का निर्माण हुआ।
- 1995: बाल्कन देश क्रोएशिया में स्टोर्म अभियान शुरू।
- 2007: नासा ने फिनिक्स अंतरिक्ष यान लांच किया।

सोशल मीडिया हमें अधिक संकीर्ण मानसिकता वाला बना सकता है क्योंकि हम सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट पर उसी तरह की खबरें और विचार ढूंढते हैं जो हमारी अपनी राय से मेल खाते हों। सोशल मीडिया ने जहां लोगों, समुदायों और मुद्दों के बीच तालमेल और सहभागिता का अवसर पैदा किया है, वहीं इसके जरिये सामाजिक सदभाव बिगाड़ने, हिंसात्मक गतिविधियों को उकसाने, अभद्र आचरण करने तथा क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति की कोशिशें भी खूब हो रही हैं। अब तो यह भी सोचा जाने लगा है कि इससे फायदे कम, नुकसान अधिक हैं।

इंसान को संकीर्ण बना रहा सोशल मीडिया?

सोशल मीडिया हमें अधिक संकीर्ण मानसिकता वाला बना सकता है क्योंकि हम सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट पर उसी तरह की खबरें और विचार ढूंढते हैं जो हमारी अपनी राय से मेल खाते हों। हाल ही में एक अध्ययन में कहा गया है कि सोशल मीडिया हमें अलग-थलग करता है, पक्षपात पैदा करता है तथा इनको पुष्ट करने में मददगार होता और कभी-कभार गलत सूचना भी देता है। अमेरिका में बोस्टन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन को दो बिंदुओं-साजिश की आशंका और वैज्ञानिक सूचना- पर केंद्रित किया। शोधकर्ताओं ने कहा कि अध्ययन से पता चलता है कि फेसबुक का इस्तेमाल करने वाले लोग कुछ विशेष संदर्भ में में सूचना का चयन करते और उसे शेयर करते हैं तथा शेष चीजों की उपेक्षा कर देते हैं। शोधकर्ताओं के मुताबिक सोशल मीडिया पर मौजूद लोगों में एक यह चलन देखने को मिला कि वे ऐसी सूचना को सर्च करने, उसकी व्याख्या करने और याद करने का प्रयास करते हैं जो उनकी पहले से बनी हुई धारणा के अनुकूल होती है।

डिप्रैस्ड महसूस करना

एक अन्य सर्वे में निष्कर्ष निकाला गया है कि पांच में से एक व्यक्ति का कहना है, कि वे सोशल मीडिया के इस्तेमाल के फलस्वरूप डिप्रैस्ड यानी अवसादग्रस्त महसूस करते हैं। 30 साल से कम उम्र के लोगों के लिए यह हैरान करने वाला तथ्य है। क्योंकि सोशल मीडिया उनकी लाइफ का एक अहम हिस्सा बन चुका है। यहां तक कि अब वे बिना स्मार्टफोन्स के कम्यूनिकेट करने में तेजी से कमी कर रहे हैं। लेकिन लगातार फेसबुक, स्नैपचैट और इंस्टाग्राम के जरिये हर स्टेटस की लगातार मॉनीटरिंग और जिंदगी के हर पहलू की कभी न खत्म होने वाली डॉक्यूमेंटिंग कहीं न कहीं खतरे की घंटी बजाता है।

जिंदगी की गलत तस्वीर: एम्प्लॉयर्स का कहना है कि स्कूल से निकलने वाले कई छात्र कामकाजी दुनिया के लिए तैयार ही नहीं हैं। क्योंकि वहां उन्हें अपने पीयर ग्रुप्स से बाहर निकलकर कम्यूनिकेट करना होता है। तब उन्हें सच में अजनबी लोगों से आमने सामने बातचीत करना होती है। हाल के दिनों में सोशल मीडिया के नकारात्मक असर पर बड़ी संख्या में एकेडमिक स्टडीज की गई हैं। जिसमें निष्कर्ष निकला कि सोशल मीडिया के नियमित इस्तेमाल से चिंता, अकेलापन और आत्मविश्वास में कमी महसूस हो सकती है। इसके अलावा नींद में भी कमी तो होती ही है। हम इन माध्यमों का अपनी जिंदगी की गलत तस्वीर ऑनलाइन कम्यूनिटी के सामने पेश करते हैं। इसमें झूठी तारीफ के लिए सेल्फीज और छुट्टियों में पार्टियों और खाने पीने की ग्लैमरस तस्वीरें पेश करते हैं। हम ऐसे व्यवहार करते हैं, जैसे हम किसी जिंदगी की फिल्म में स्टार कर रहे हों। जिसमें हम लीड करना चाहते हैं। ऐसे में लाइक्स और शेयर्स की कमी की वजह से कुछ कमी सी महसूस करते हैं।

गुस्सा और मूड अपसेट

हम अपने निजी अनुभवों को बिल्कुल अजनबी लोगों के सामने पेश करते हैं। हम गलत मानते हैं कि ऑनलाइन फ्रेंड वास्तविक फ्रेंड नहीं है। जिनकी राय महत्व नहीं रखती। जहां तक ट्विटर का सवाल है, यह भी बस चिल्लाने का एक माध्यम बन गया है। ट्विटर गुस्सा और मूड अपसेट करने के प्रभाव पैदा

ऑनलाइन फ्रेंड वास्तविक फ्रेंड नहीं है। जिनकी राय महत्व नहीं रखती।

कर रहा है। कई महिलाओं को भी ट्विटर पर टारगेट किया जाता है। एक किताब द स्लीप रिवॉल्यूशन में एक्सपर्ट्स का हवाला देते हुए लेखिका कहती हैं, कि बेडरूम में कोई भी स्क्रीन नहीं होनी चाहिए। हमें आराम करने के एक घंटे के दौरान सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। हम कितनी बार अपने फोन पर मैसेजेस पढ़ते हैं? इसके बाद घंटों तक उथल-पुथल में समय गुजार देते हैं। सोशल मीडिया कभी स्विच ऑफ नहीं होता। कोई ना कोई किसी जगह पिक्चर्स, कमेंट्स और मैसेजेस पोस्ट करता रहता है। हमसे हर वक्त चैट में शामिल होने या ओपिनियन देने के लिए कहा जाता है। इसके चलते कई टीनएजर्स डिसीजन पैरालिसिस से पीड़ित होते जा रहे हैं। क्योंकि ऑपशन्स किसी भी ह्यूमन ब्रेन के लिए डील करने के लिए काफी ज्यादा संख्या में हैं।

नफरत फैलाने का काम

इंटरनेट और दूरसंचार माध्यमों के जरिये एक-दूसरे से अदृश्य तरीके से जुड़ी लाखों-करोड़ों लोगों की भीड़ की दिशा सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भी। दुखद तथ्य यह है कि यही अदृश्य, किंतु कनेक्टेड भीड़ यदि किसी निहित स्वार्थ, गलतफहमी या पूर्वाग्रह से प्रेरित हो, तो समाज को बांटने में भी देर नहीं लगती। ऐसी स्थिति में वह अराजकता का माध्यम बन जाती है। सोशल मीडिया का इस्तेमाल दूसरों के खिलाफ दुष्प्रचार और नफरत फैलाने के लिए खूब होने लगा है। समझ नहीं आता कि किसी भी व्यक्ति के बारे में बिना कोई मुकदमा चलाये, बिना तथ्यों की जांच-पड़ताल किए और बिना उसका पक्ष जाने हम सोशल मीडिया पर कैसे किसी को अपराधी करार दे सकते हैं। इस बात की परवाह कोई नहीं करता कि जब बड़ी संख्या में लोग निराधार बात को दोहराते हैं, तो उसे सच मान लिया जाता है।

सवाल ये हैं

क्या हम लोकतंत्र, इंटरनेट की मुक्त प्रकृति और अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर ऐसी तमाम नकारात्मक घटनाओं को अनदेखा करने का जोखिम मोल ले सकते हैं, जो सोशल मीडिया का निर्बाध और अविवेकपूर्ण इस्तेमाल से पैदा हो रही हैं? क्या हम यह सोच कर तसल्ली कर सकते हैं कि जिस तरह हर चीज के दो पहलू होते हैं, अच्छी और बुरी, ठीक उसी तरह सोशल मीडिया के भी दो पहलू हैं और हमें इस तथ्य के साथ जीना होगा? क्या हम यह सोच कर उम्मीद लगा सकते हैं कि हमारा समाज धीरे-धीरे सोशल मीडिया के प्रति परिपक्व होता चला जायेगा और ऐसी समस्याएं धीरे-धीरे कम होती चली जायेंगी? शायद नहीं, क्योंकि इसका ठीक उल्टा नहीं होगा, इस बात की भी तो कोई गारंटी नहीं है!

अनियंत्रित प्रकृति

नदी का पानी रोककर बांध बनाया जाता है, ताकि उससे आसपास के खेतों में सिंचाई हो सके लेकिन अगर कोई बाढ़ के समय आधी रात को उसी बांध की दीवारें ध्वस्त कर दे, तो धरती पर सोना उपजा कर जीवनदान देनेवाला वही बांध सैंकड़ों लोगों का जीवन लेने वाली विभीषिका में तब्दील हो सकता है। कटु अवश्य है, किंतु सत्य है कि सोशल मीडिया की अनियंत्रित प्रकृति उसे यदा-कदा अराजकता का माध्यम भी बना रही है। यह अराजकता दोनों तरह की है- व्यक्तिगत भी और सामूहिक भी। व्यक्तिगत अराजकता मासूम लोगों को नुकसान पहुंचाने वाले साइबर अपराधों के रूप में दिखाई देती है, जैसे साइबर बुलिंग, साइबर स्टॉकिंग, इंटरनेट ट्रॉलिंग, मानहानि, अश्लीलता, बाल-शोषण, पहचान की चोरी आदि के रूप में। सामूहिक अराजकता कभी दंगे भड़का देती है, तो कभी किसी खास समुदाय के भीतर भय पैदा कर देती है। कभी वह जाने-अनजाने में आतंक की मदद कर बैठती है, तो कभी किसी बेकसूर व्यक्ति को त्वरित और काल्पनिक मुकदमे में दोषी सिद्ध कर देती है। अलग-अलग स्थान पर बैठे लोगों को नियंत्रित या अनुशासित करना या उनका अच्छा आचरण सुनिश्चित करना भला कहां संभव और व्यावहारिक है! इसी अराजकता की वजह से दुनिया की अनेक सरकारें, व्यापारिक संस्थान और आम लोग आशंकित हैं। अपरिमित शक्ति से लैस यह माध्यम रेगिस्तान में मदमस्त भटकते ऊंट की तरह कब किस दिशा में बैठ जाये, कौन जाने!

आसान ट्रिक

मेमोरी कार्ड से डिलीट डाटा को ऐसे करें रिकवर

आज हर कोई स्मार्टफोन का इस्तेमाल करता है। लगभग सभी डाटा स्मार्टफोन में सेव किया जाता है। फोन की इंटरनल मेमोरी कम होने के चलते यूजर्स मेमोरी कार्ड का इस्तेमाल करते हैं। मेमोरी कार्ड में एप्स, म्यूजिक, वीडियो, फोटो समेत अन्य डाटा स्टोर किया जा सकता है। ऐसे में अगर आपका मेमोरी कार्ड खराब हो जाए, तो आप क्या करेंगे? ऐसा होने से आपका पर्सनल और जरुरी डाटा डिलीट हो सकता है। इसी परेशानी को हल करने के लिए हम आपको एक आसान ट्रिक बताने जा रहे हैं, जिससे मेमोरी कार्ड से डिलीट हुए डाटा को रिकवर किया जा सकता है।

कार्ड को दूसरे डिवाइस के साथ चेक करें: सबसे पहले अपने मेमोरी कार्ड को किसी दूसरे डिवाइस में चेक करें। कई बार वायरस के कारण डाटा डिवाइस में शो नहीं करता है। ऐसे में अपने एसडी कार्ड को निकालकर दूसरी डिवाइस में लगाएं और चेक करें।

कार्ड रीडर में देखें मेमोरी कार्ड: मेमोरी कार्ड को कार्ड रीडर में लगाकर एक बार चेक करें। इसके बाद स्टार्ट पर जाकर सर्च बॉक्सट में 'cmd' टाइप करें। अब कमांड विंडो ओपन हो जाएगी। यहां ड्राइव को फॉलो करते हुए ÷ष्द्धद्मस्त्र-ह्यद्म÷ टाइप करें। इसके बाद कोलन और /एफ लिखें। एंटर कर दें और आपको आपकी समस्यां का समाधान मिल जाएगा।

ड्राइव चेक: कई बार ऐसा होता है कि सिस्टम, मेमोरी कार्ड के लिए नई ड्राइव को असाइन नहीं करता है और यह पॉपअप आता है कि ड्राइव ई में डिस्क को लगाएं। ऐसे में सेटिंग के जरिए न्यूं ड्राइव लेटर को असाइन कर इस प्रॉब्लम को सॉल्व किया जा सकता है।

कार्ड प्रॉपर्टी

कार्ड ड्राइव की प्रॉपर्टी में जाएं और स्पेसको चेक करें। अगर आपके कार्ड से सभी फाइल डिलीट हो गई होंगी, तो एसडी कार्ड में पूरा स्पेस दिखाई देगा। कई बार सिर्फ डायरेक्ट्री ही डिलीट होती हैं। ऐसी स्थिति में, आप सैनडिस्क इनबिल्ट सॉल्यूशन का इस्तेमाल कर सकते हैं जो कि डिलीट हुई सारी फाइल्स को रिस्टोर कर सकता है।

इंस्टाग्राम की स्टोरीज कर सकेंगे व्हाट्सएप्प पर पोस्ट

इंस्टाग्राम ने कुछ समय पहले अपनी ऐप में स्नैपचैट जैसे एक फीचर का इस्तेमाल किया था, जिसमें यूजर्स को स्लाइड शो में फोटो और वीडियो को एक साथ पैच करने की अनुमति दी गई थी। इस फीचर के बाद यूजर्स के लिए स्टोरी को सीधे फेसबुक पर पोस्ट करना आसान हो गया। वहीं, अब फेसबुक कोशिश कर रहा है कि व्हाट्सएप को भी इसमें कैसे शामिल किया जा सकता है। फेसबुक अब यूजर्स को व्हाट्सएप में व्हाट्सएप स्टेटस के रूप में अपने इंस्टाग्राम स्टोरीज को सीधे पोस्ट करने के लिए एक टेस्ट कर रहा है। यह मैसेजिंग एप में संबंधित स्नैपचैट जैसा फीचर होगा, जहां फोटो, वीडियो और लढ्ढस्नह्य को एन्क्रिप्शन के साथ पोस्ट किए जा सकेंगे। वहीं, यह स्टोरीज 24 घंटे के बाद अपने आप गायब हो जाएगी। वहीं, अब कंपनी कोशिश कर रही है कि व्हाट्सएप्प को भी इसमें कैसे शामिल किया जाए। रिपोर्ट के मुताबिक, इंस्टाग्राम अब यूजर्स को व्हाट्सएप में व्हाट्सएप स्टेटस के रूप में अपने इंस्टाग्राम स्टोरीज को सीधे पोस्ट करने के लिए एक टेस्ट कर रहा है। यह मैसेजिंग एप में संबंधित स्नैपचैट जैसा फीचर होगा, जहां फोटो, वीडियो और लढ्ढस्नह्य को एन्क्रिप्शन के साथ पोस्ट किए जा सकेंगे।

स्मार्टफोन में स्टोरेज को लेकर हैं परेशान तो...

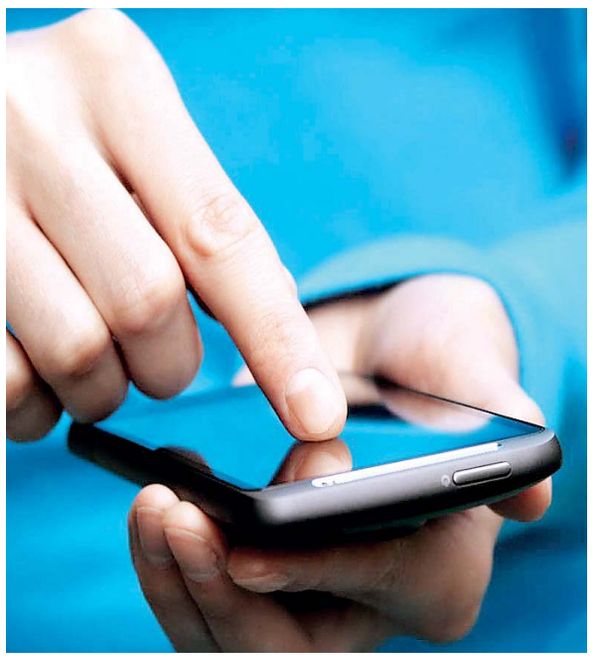

शुरुआत में तो स्मार्टफोन चलाने में लोगों को खूब मजा आ रहा है लेकिन असली ड्रामा तब शुरू होता है जब मोबाइल की स्टोरेज फुल हो जाती है। आप मेमोरी खाली करने की सोचते हैं लेकिन कुछ ऐसी ऐप होती हैं जिन्हें रखना आपके लिए जरूरी होता है और मेमोरी खाली नहीं हो पाती है। अगली स्लाइड में जानें कैसे करें मेमोरी खाली।

हमारे फोन की सबसे ज्यादा मेमोरी कैच में जाती है, इसलिए सबसे पहले इसे क्लियर करें। इसके लिए ये स्टेप फॉलो करें। सेटिंग में जाकर स्टोरेज में जाएं वहां आपको कैच लिखा होगा। उसे क्लियर कर दें। इससे आपकी कोई फाइल डिलिट नहीं होगी।

मेमोरी कार्ड का इस्तेमाल करें

पहले सभी के स्मार्टफोन में आपको मेमोरी कार्ड मिलते थे। लेकिन आजकल फोन में इतनी स्टोरेज मिल रही है कि मेमोरी कार्ड लोग खरीद ही नहीं रहे हैं। आपके लिए बेहतर होगा कि मेमोरी कार्ड यूज करें। इससे आपके फोन की स्टोरेज खाली रहेगी।

गूगल फोटोज का इस्तेमाल करें

प्रत्येक स्मार्टफोन में आपको गूगल फोटोज मिलता है। लेकिन अधिकतर लोग यूज नहीं करते हैं। इसमें आप फोटो या वीडियो आसानी से रख सकते हैं और फोन से डिलिट कर सकते हैं। इसका फायदा ये भी है कि आप जब चाहें इन फाइलों को जीमेल से निकाल भी सकते हैं।

ऐप को मेमोरी कार्ड में मूव करें

ऐप कोई भी हो वह फोन की काफी स्टोरेज को कवर करती है, इसलिए आपके लिए बेहतर होगा कि आप एंड्रॉयड फोन की सेटिंग में जाकर ऐप को माइक्रो एसडी कार्ड में मूव कर दें। सेटिंग में जाकर एप्लिकेशन और फिर एप्लिकेशन मैनेजर में जाएं और किसी ऐप को टैप करें और उसे मेमोरी कार्ड में मूव कर दें।

ऐप की स्टोरेज देखें

सेटिंग्स में जाकर वहां से ऐप में जाएं। वहां डाउनलोड किए किसी भी एक ऐप पर टैप करें। अब आपको क्लियर डाटा का ऑप्शन दिखेगा। उसे क्लियर कर दें, हालांकि क्लियर करने के बाद ऐप रिसेट हो जाएगा। मतलब वैसे ही जैसे इंस्टॉल करने पर होता है।

डाउनलोड फोल्डर को डिलिट करें

आपके स्मार्टफोन में एक डाउनलोड फोल्डर होता है। जिसमें कई बेकार की फाइल पड़ी रहती हैं। उन्हें सप्ताह में एक बार चेक करके बेकार की फाइलों को डिलिट करते रहें।

पूरे शाही लवाजम के साथ निकली मां वैष्णो देवी की शोभायात्रा

कलश यात्रा में उमड़ी महिलाओं की आस्था

सूरत। सूरत सहित पूरे देश में शारदीय नवरात्र का शुभारंभ बुधवार को घट स्थापना से शुरू हुआ। श्रद्धालुओं की ओर से पूरे नौ दिन तक जगह-जगह धार्मिक अनुष्ठान, गरबा रास व डांडिया के अलावा देवी जागरण का आयोजन कर मां भगवती के अलग-अलग नौ स्वरूपों की पूजा आराधना की जाएगी। नवरात्री के प्रथम दिन बुधवार सुबह सिटी लाइट राणी सती मंदिर से श्री श्री 108 शत चण्डी महायज्ञ पाठ के निमित्त गाजे-बाजे, बग्गी, डीजे व पूरे शाही लवाजम के साथ विशाल कलश शोभा यात्रा निकली। शोभा यात्रा इलाके के चंदन पार्क,महाराजा अग्रसेन भवन, आगरा स्वीट से होते हुए सिटी लाइट के वैष्णो द्वार तेरापंथ भवन के सामने मां वैष्णो मंदिर में पहुंचकर सम्पन्न हुई। मां वैष्णो देवी की शोभायात्रा में शामिल हजारों महिलाएं अपने सिर श्रीफल सहित कलश को लिए चल रही थी। बग्गी पर सवार माताजी अपने भक्तों पर फूल व अक्षत की वर्षा कर अपने आर्शीवाद से अभिसिंचित कर रही थी। जबकि शोभायात्रा में शामिल श्रद्धालु हाथों में धर्म ध्वज लिए जय माता दी के गगनभेदी जयकारे लगा रहे थे। शोभायात्रा के दौरान पूरा इलाका भक्तिमय हो गया था। त्रिकूट राज राजेश्वरी माता वैष्णो देवी का सुबह- शाम पुष्पहार से अलौकिक श्रृंगार कर मां के प्रथम स्वरूप की आराधना की गई।

नवरात्रि त्यौहार की परंपरागत तरीके से भव्य शुरूआत हुई

सूरत। सूरत सहित गुजरात में नवरात्रि त्यौहार की बुधवार को परंपरागत तरीके से शुरूआत हुई थी। अब नौ दिन तक नवरात्रि त्यौहार का मनाया जाएगा। अहमदाबाद में मुख्य कार्यक्रम जीएमडीसी ग्राउन्ड में आयोजित किया गया है। बुधवार शाम को गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रुपाणी ने नवरात्रि त्यौहार की शुरूआत कराई। इस अवसर पर गुजरात कैबिनेट के कई मंत्री भी उपस्थित हुए। विजय रुपाणी के प्रथम दिन आरती करके इसकी शुरूआत कराई। उद्घाटन के अवसर पर उपमुख्यमंत्री नीतिन पटेल और गुजरात कैबिनेट के अन्य मंत्री उपस्थित हुए। इस बार छत्तीसगढ़ से भी यहां कलाकार पहुंचे है। नवरात्रि त्यौहार की शुरूआत होने के बाद अब हररोज रात को ९ बजे से आधीरात तक शेरी गरबा भी आयोजित की जाएगी। इस वर्ष थीम पेवेलियन में राज्य के विभिन्न आकर्षण प्रदर्शित किए गए है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ से क्राफ्ट स्टोल और फूड स्टोल की व्यवस्था की गई है। ७५ क्राफ्ट स्टोल रखे गये है। रात को ११.४५ बजे महाआरती का आयोजन किया गया है। २०१७ में नवरात्रि त्यौहार में हिस्सा लेनेवाले की संख्या बढ़कर ६.५० लाख तक पहुंच गई। अहमदाबाद के वायएमसीए में भी रढियाली रात नवरात्रि त्यौहार का आयोजन किया गया है। जिसमें अलग-अलग आकर्षणों को शामिल किया गया है। हररोज लोकप्रिय ऑरकेस्ट्रा विशेष टेलेन्ट के साथ स्टेज पर लाइव परफोर्म करेंगे। कल्चरल ग्रुप, प्रोफेशनल गरबा ग्रुप, ट्रेडिशनल डान्सरों हररोज परफोर्म करेंगे। संपूर्ण रूप से सुविधाजनक पार्किंग की व्यवस्था की गई है।

सूरत। पुलिस कमिश्नर सतीश शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके लोगों को यह जानकारी दी की किसी भी प्रकार की अफवाह पर प्रपरांतीयों को डरने की आवश्यकता नहीं है। कानून व्यवस्था का कड़ाई से पालन किया जा रहा है अगर कोई भी अफवाह लोगों के पास आती है तो वह पुलिस को फोन करके इसकी जानकारी दें और पुलिस कंट्रोल में से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सूरत शहर पुलिस कमिश्नर ने कहा कि नवरात्रि के अवसर पर सूरत में किसी भी महिला को वाहन ना मिले या घर जाने में परेशानी होती हो वह 100 नंबर डायल करके पुलिस की मदद ले सकते हैं पुलिस सुरक्षित उन्हें उनके घर तक पहुंचाने में उनकी मदद करेगी।

तुलसी शोभा यात्रा में उमड़ी गो भक्तों की आस्था

सूरत। पथमेड़ा गोधाम महातीर्थ सूरत इकाई की ओर से गो ऋषि संत स्वामी दत्त शरणानंद महाराज के सानिध्य में बीते दिवस नवरात्र पर्व के दौरान आयोजित श्री सुरभि शक्ति आराधना महोत्सव के निमित्त तुलसी शोभा यात्रा निकाली गई। तुलसी शोभा यात्रा के दौरान काफी तादाद में महिला व पुरूष गो भक्त शामिल हुए। श्री सुरभि शक्ति आराधना महोत्सव की शुरूआत सूर्य प्रकाश रेजीडेंसी के निकट कथा स्थल पर बुधवार सुबह श्री रामचरित मानस नवान्ह पारायण पाठ से होगी। 10 दिवसीय महोत्सव के मनोरथी गजानंद कंसल सहित अन्य गो भक्त की मौजूदगी में तुलसी यात्रा सच्चियाय माता मंदिर से मंगलवार शाम पांच बजे शुरू हुई। यात्रा में गाजे-बाजे, ऊंट गाड़ी, झांकियों के अलावा काफी तादाद में महिलाएं तुलसी पौधे के साथ शामिल हुई। शोभायात्रा आयोजन स्थल पर पहुंच कर सम्पन्न हुई। गो ऋषि दत्तशरणानंद महाराज के सानिध्य में गो पूजन व आरती की गई। इस अवसर पर मूलक पीठाधीश्वर राजेन्द्र दास महाराज, ब्रह्म सावित्री पीठाधीश्वर तुलसाराम महाराज, वेदव्यास प्रतिष्ठान पुणे के गोविंद देव गिरी महाराज, गिरीशानंद महाराज सहित अन्य मौजूद रहे।

सरकारी और ग्रान्टेड स्कूलों में नवरात्रि का वेकेशन

आखिर में स्कूलों में हुआ नवरात्रि वेकेशन का प्रारंभ

अहमदाबाद की १६८१ स्कूलों में नौ दिन कार्य बंद : शिक्षा विभाग वेकेशन के निर्णय को लागू कराने के लिए दृढ़

अहमदाबाद। पिछले एक महीने से चल रहे और विद्यार्थियों की दुविधा, उलझन की परिस्थिति और विवादों के बीच बुधवार से शहर की सरकारी और ग्रान्टेड स्कूलों में नवरात्रि का वेकेशन प्रारंभ हो गया है। नवरात्रि वेकेशन के दौरान शहर की १६८१ स्कूलों में शिक्षण कार्य बुधवार से नौ दिन के लिए बंद रहेंगे। शिक्षाधिकारी कार्यालय शिक्षा विभाग के आदेश का पालन कराने के लिए दृढ़ है। दूसरी तरफ, राज्य सरकार के नवरात्रि वेकेशन के निर्णय का जो स्कूल पालन नहीं करे ऐसी स्कूलों के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई करने की सरकार ने चेतावनी दिए होने से शिक्षा विभाग इस मामले पर कड़ी निगरानी रख रही है। पहले गुजरात बोर्ड के अलावा स्कूल जो वेकेशन का विरोध करती थी ऐसी कई स्कूल तो ठीक सीबीएसई की कई स्कूलों ने भी वेकेशन घोषित कर दिया है। इस बारे में जिला प्राथमिक शिक्षाधिकारी महेश मेहता ने बताया है कि, बुधवार को अहमदाबाद शहर की सभी सरकारी ग्रान्टेड और निजी स्कूलों में नवरात्रि का वेकेशन शुरू हो गया है। किसी भी स्कूल में शिक्षण कार्य चालू हो या खुली हो ऐसी शिकायत हमें अभी तक नहीं मिली है। हरएक स्कूल १८ अक्टूबर तक बंद रहेंगे। कई निजी स्कूल बुधवार को खुली होने की जानकारी होने के मामले में अहमदाबाद शहर निजी स्कूल संचालक मंडल के प्रमुख धीरेनभाई व्यास ने बताया है कि, कुछ दिनों के लिए नवरात्रि उत्सव हो या परीक्षा हो तो स्कूल खुली होगी, लेकिन हमारे पास ऐसी कोई शिकायत या जानकारी नहीं है। विद्यार्थियों का परीक्षा के समय में शिक्षण कार्य अभी बिगड़ेगा लेकिन सरकारी आदेश होने से इसका पालन करना जरूरी होने से इसका पालन करना जरूरी होने से सभी निजी स्कूलों को वेकेशन के आदेश का पालन करेंगे ऐसी अपेक्षा है। हालांकि सरकार और शिक्षा विभाग के अधिकारी स्कूलों पर कड़ी नजर रख रहे है और कौन-सी स्कूल वेकेशन के निर्णय का पालन नहीं कर रहे है इस पर नजर रखी जा रही है।

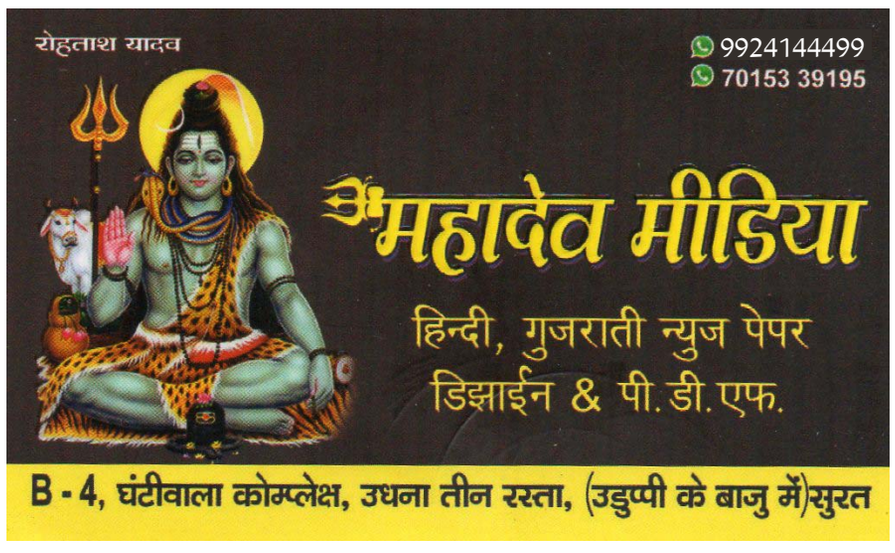

मानवाधिकार आयोग द्वारा मुख्य सचिव और डीजीपी को नोटिस

अहमदाबाद। राज्य में फिलहाल उत्तर भारतीयों पर हो रहे हमले के मामले में अब मानवाधिकार आयोग भी सक्रिय हो गया है।

घटना के ८ दिन बाद अब गुजरात राज्य मानवाधिकार आयोग ने राज्य के मुख्य सचिव जेएन. सिंघ और राज्य के पुलिस महानिदेशक शिवानंद झा को नोटिस भेजा गया है। इसके साथ-साथ अहमदाबाद शहर पुलिस कमिशनर को भी नोटिस जारी किया गया है। परप्रांतीय पर हमले के प्रकरण में मानवाधिकार आयोग ने २० दिन में पूरी जानकारी के साथ जांच रिपोर्ट पेश करने का आदेश दिया गया है।

अवैध कॉल सेन्टर पकड़े जाने का सिलसिला जारी

वटवा क्षेत्र से कॉल सेन्टर पकड़ा गया : छह गिरफ्तार

अहमदाबाद। विदेशी नागरिकों के साथ धोखाधड़ी करने वाले इन्टरनैशनल कॉल सेन्टर को बंद कराने के लिए पुलिस द्वारा शहर में अक्सर छापेमारी कर कार्रवाई की जाती है लेकिन इसके बावजूद भी अभी भी शहर में अवैध कॉल सेन्टर पकड़े जाने का सिलसिला जारी रहा है। पुलिस केस से बचने के लिए अब चोरों ने शहर के कोने-कोने पर छोटे -छोटे कॉल सेन्टर शुरू कर दिया है। ऐसा ही एक कॉल सेन्टर गत दिन देर रात को वटवा क्षेत्र में स्थित एक मकान में से पुलिस ने पकड़ लिया और यह अपराध में छह आरोपियों को गिरफ्तार करके आगे की जांच शुरू कर दी है।अवैध कॉल सेन्टर चलाते छह युवक अमेरिकन नागरिकों को लोन देने की लालच देकर अलग-अलग वेरिफिकेशन फीस, लोन एग्रीमेन्ट फीस सहित की कई लालच देकर रुपये वसूल किए जाते थे। पुलिस ने आरोपियों के पास से छह लेपटोप, छह मोबाइल, छह राउटर और छह मेजिक सहित का मालसामान जब्त किया गया है और पूरे मामले में आगे की जांच शुरू कर दी है।

वटवा पुलिस को जानकारी मिली है कि, वटवा क्षेत्र में स्थित कुतूबनगर में विदेशी नागरिकों के साथ धोखाधड़ी करने का इन्टरनैशनल कॉल सेन्टर चल रहा है। मिली जानकारी के आधार पर वटवा पुलिस स्टेशन के पुलिस इंस्पेक्टर सहित डी स्टाफ की टीम देर रात घटना स्थल पर पहुंचकर छापेमारी की गई। छापेमारी के दौरान पुलिस ने युवकों को गिरफ्तार किया और लेपटोप और मेजिक जेक सहित का मालसामान जब्त किया गया।

पुलिस ने सभी युवकों के विरूद्ध में धोखाधड़ी सहित की विभिन्न धाराओं के तहत अपराध दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। उल्लेखनीय है कि, पिछले कई समय से शहर के पूर्व क्षेत्र में इन्टरनैशनल कॉल सेन्टर चल रहा है।

सूरत। गीतानगर-3 पांडेसरा के पांडाल में विराजमान मां की दिव्य मूर्ति और उनकी आराधना करते मां के भक्त।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **RNI.No. : GUJHIN/2018/75100**, E-mail: krantisamay@gmail.com